Dr HONEY SINHA
(Assistant Professor)
Dept. of Commerce
Sub:- Financial Accounting (Hons)
Paper:- 1st
SNSRKS College, Saharsa

Lecture:-96

B.Com Part 1st

*Introduction

** Kinds of Indian Accounting System*
(भारतीय बहीखाता प्रणाली के प्रकार)

भारतीय लेखांकन पद्धति में पुस्तकों को बही कहा जाता है। बाकियों का स्वरूप अंग्रेजी पद्धति में प्रयोग होने वाली पुस्तकों या रजिस्टरों से भिन्न होता है। (1) बहियां सफेद, लम्बे और मजबूत कागज की बनाई जाती है। उनके ऊपर एक विशेष प्रकार का पट्टा तथा लाल कपड़े का आवरण होता है। इनमें सिलाई मोटे और मजबूत डोर से की जाती है जिस डोर से यह सिली होती है उसी से बांध दी जाती है। (2) इसके पृष्ठों पर खानें छपे नहीं होते, वरन् मिलने से पहले बहियों के पन्ने सफाई के साथ मोड़ दिये जाते है। ये मोड़ खानों का काम देते है। इन्हे सल कहा जाता है। (3) अधिकतर बहियों में पृष्ठ दो भागों में बँटा होता है – प्रथम चार सलें 'जमा' और अन्तिम चार सलें 'नाम' पक्ष के लिए होती है।

उल्लेखनीय है कि अंग्रेजी पद्धति का नाम पक्ष बायीं ओर तथा जमा पक्ष दाहिनी ओर होता है जबकि भारतीय पद्धति में नाम पक्ष दाहिने भाग को और जमा पक्ष बायें भाग को कहा जाता है। (4) प्रत्येक पक्ष का प्रथम खाना 'सिरा' और शेष तीन खाने 'पेटा' के नाम से पुकारे जाते है। सिरा में कुल धनराशि और पेटा में विभाजित धनराशियां सम्बद्ध विवरण सहित लिखी जाती है। (5) बहियों में लेनदेन लिखने को 'जमा खर्च' करना कहते है

जिस प्रकार अंग्रेजी पद्धति में हिसाब की एक प्रधान पुस्तक होती है जिसे खाता पुस्तक या लैजर कहा जाता है उसी तरह भारतीय पद्धति में भी हिसाब की एक प्रधान पुस्तक होती है। और यह पुस्तक खाता बही कहलाती है। बहीखाता तो हिसाब रखने की विधा है,

किन्तु इस विधा को प्रयोग करते हुए जिस प्रधान पुस्तक में लेन-देन वर्णित करके चढ़ाये जाते है, उसे खाता बही कहा जाता है।

* बहियों के प्रकार *

व्यापार में भिन्न प्रकार की बहियां रखी जाती है :-

1) आकार के आधार पर बहियों के भेद — आकार के आधार पर बहियां दो प्रकार की होती है: लम्बी बहियां और चौड़ी बहियां। लम्बी बहियों की सिलाई ऊपरी सिरे से होती है। ये प्रायः 76.20 cm लम्बी और 19.05 cm या 24.4 cm चौड़ी होती है। चौड़ी बहियां अभ्यास-पुस्तिकाओं के समान कागज को दोहरा कर बीच में से सिली हुई होती है। ये प्रायः 34.29 cm से 29.40 cm तक लम्बी और 15.24 cm तक चौड़ी हुआ करती है।

2) सल के अनुसार बहियों के भेद — कुछ बहियों में आठ सलें होती है जबकि कुछ में केवल छह सलें। नाम और जमा के पृथक-पृथक पक्ष वाली बहियों में आठ सलें हुआ करती है, किन्तु अन्य बहियों में छह सलें होती है।

3) लिपिबद्धता के अनुसार — भारतीय पद्धति में बहुधा दोबार बहियां लिखी जाती है। पहली बार हिसाब जिन बहियों में लिखा जाता है उन्हे 'कच्ची बहियां' कहते है। कच्ची बहियों से बाद में स्वच्छतापूर्वक नकल अन्य बहियों में की जाती है, जिन्हे पक्की बहियां कहा जाता है। कच्ची बहियों और पक्की बहियों में अंतर केवल इतना है कि द्वितीय प्रकार की बहियां प्रथम प्रकार की बहियों का स्वच्छ रूप है जबकि कच्ची बहियां चौड़ी होती है, पक्की बहियां लम्बी। ऐसे पुनर्लेखन से धन और समय तो व्यय होता ही है, किन्तु बहियों की जांच हो जाती है।

(4) प्रयोग के आधार पर :- बहियों का वर्गीकरण
(i) लेखा बहियां
(ii) स्मरणात्मक बहियां
(iii) प्रमाणक बहियां
(iv) विवरणात्मक बहियां
(v) स्कन्ध बहियां

1) लेखा बहियां → लेखा बहियां वे है जिनका प्रयोग लेन-देनों का वास्तविक लेखा करने हेतु किया जाता है। मुख्य लेखा बहियां दो है — रोकड़ बही और नकल बही।

2) स्मरणात्मक बहियां → ये बहिया केवल स्मरण के लिए रखी जाती है और टिप्पणी पुस्तिकाओं या रद्दी बहियों के सदृश्य होती है। इस प्रकार की प्रमुख बहियां निम्न है :-
(i) टीपनी बही (ii) जाकड़ बही (iii) तकपट्टी अथवा तौल बही
(iv) बन्द (v) तमादा बही (vi) सौदा बही (vii) फेहरिस्त बही।

3) प्रमाणक बहियां → अंग्रेजी पद्धति में प्रमाणक बनाये जाते है और उनका उल्लेख बहियों में सम्बन्धित प्रविष्टि के साथ होता है। इसमें सौदे का प्रमाणन करना संभव रहता है, किन्तु भारतीय बहीखाता पद्धति में प्रमाणन व्यवस्था नही है। इसके ~~अधीन~~ अधीन, जब रोकड़ी धन अथवा माल दिया जाता है तो पाने वाले के हस्ताक्षर बहियों में करा लिए जाते है, जिससे प्रमाण रहें। इस उद्देश्य से रखी जाने वाली बहिया निम्न है :-
(i) दस्तखती रुपया बही (ii) दस्तखती माल बही (iii) दस्तखती तमादा बही (iv) वचन्त बही।

4) विवरणात्मक बहियां → इन बहियों का प्रयोग विभिन्न व्यापारिक पत्रों, दस्तावेजों और सौदों का विवरण लिखने हेतु किया जाता है। इस प्रकार की प्रमुख बहियों को नीचे समझाया गया है :-

(i) चिट्ठी बही (ii) कच्ची बही (iii) हुण्डी बही (iv) मुंद्द बही (v) सुनार बही (vi) हिसाब बही (vii) ब्याज बही।

5) स्कन्ध बहियां → ये बहियां माल का परिमाणिक लेखा रखने के लिये है। इस प्रकार की प्रमुख बहियां निम्नांकित है:-

(i) गोदाम बही, माल बही या खतबन्दी
(ii) जन्त्री अथवा फैरनी बही।

— x —

The end

Dr. HONEY SINHA
(Assistant Professor)
Dept. of Commerce
SNSRKS COLLEGE,
SAHARSA

— x —